

1501	ASHA ARCHIVES
ASHA ARCHIVES	

ASHA ARCHIVES

पाउनिदिनें सरुन ले नर्य भनदू नरी कू नू मान ॥ ८ ॥ जलजयुनिताः
 कनेमजानीरुल कां झोललवङ्ग गभयके नमनेनमने निवा निधीः
 नेरुगवस्था चमने निधीयनी ॥ ९ ॥ निदिनें कनकस्य सैपूट पिदिनें नः
 लपिधान केनयन नदिदरु वगनी कनेर्यिनें मधूपर्क अननियुग
 अनी ॥ १० ॥ एनचम्ये कनेलमम्व विविधे ४ यथे म्रदुवा सिने ॥ न्यस्रन
 लमयसवर्षु च कर्ह म्रमदिदने ॥ ११ ॥ सानन्द सन सनद्री किः
 नहिनारु रुचेनेनमया ॥ कः १ ॥ पूउमनय रुषके सल घः ॥ म्रवा लिप्य
 ३२

न ॥ १२ ॥ मान ४ कू मय कू निर्मित मिदद रुन वादरुनें रु क्का रु कलया
 मिहमनजसासं मिहने कः १ ॥ कः १ ॥ नामल के विहम्व विहया न्क रु नि
 काधनेने ॥ स्तान कन वनल कुरु सदिने ४ सैवा सिना स्नाद के ॥ १३ ॥ दधि
 दग्धदुने ४ समाक के ४ गिनया ४ केनया समनिने ॥ स्तपया सिन वं वारु
 मादरु ४ जेन नितीपुन नू वानिहि ॥ १४ ॥ एला जी न सवा सिने ४ सकः
 स मेर्न मादिनि ॥ थिद के म्रानि कामन मोकि कामन्यने ४ सव ४ सव ॥
 द के ४ मरु न्नेदि कना लि कान्य निप ० सानन्द मर्यादना स्तान कपनिक

ल्यामिऊननिस्तानेत्तमंगीकृत् ॥ १७ ॥ वालार्कयुनिदातिमीयकसम
 पश्यद्विसर्वात्ममानस्त्वपत्रिधरिदिवावसुनरुक्मामयाकल्पितेभ
 कारिर्गुणितैवकेचुकमिदंस्त्रीकृत्यपीनपरं सफस्वसुसमानवसुमनुले
 पावसुमंगीकृत् ॥ १८ ॥ नवत्रययभमयायितकमनीयनयनीयपाद
 क॥ सविलासमिदं पदद्वयं कृपयादवितयाविधीयतां ॥ १९ ॥ वदुहिने
 गत्रधूपेसादेनधूपयित्वा रुगवतितवकक्षानककटमार्जयित्वा ॥ स
 त्रहितिनेत्रविन्दे इत्यमके इत्यर्चयित्वा मठितिकेनकस्तुनेकृत्यस्वयः

यामि ॥ २० ॥ सोवीजाऊनमिदमंमचक्रवाहं विन्यस्तं कनकशलाकयनं
 मयायनं ॥ नन्वेनमलिनमपित्वदेकिसेगादुक्कृत्याग्रहिलषनीयतामि
 याय ॥ २१ ॥ मीजीनान्येदयाविधायनविनीविन्यस्तकाकुंठोमूकाः
 हात्रमंजाजयात्रेनूपमीनकृण्मालांगल ॥ कयूनानिउजयनत्रवल्यः
 श्लीकृत्रयुक्तमालाटंकनवकसुधाविनिहिननिर्धचवृजामि ॥ २२ ॥
 धमिन्ननवदविरुमकमूमयौधायरालसुलं मूकानाजिविनाजिहम
 निलकेनासायनमोकिदी ॥ मानभोकिवजालिकीचकचयाः सवृद्धि

लीपूँर्मिका ४ कर्षी कीचनकिङ्कि लीविनिद (धनतावननैशुनो ॥ २१ ॥ म
नलीलनलनवानिविमल का ६मीनकसूत्रिका कर्षुगागुत्रहि ४ कत्रामिः
निलकंदहंगगागीनन ॥ वक्षाजादिषयककंदमनसैसिक्ताचपय्यदवैष्ट
निपादोर्ककमलयनादिसहिनेसैपूजयामिकमान ॥ २२ ॥ नत्ताकनेसै
यनियूजयामिसूकाफलैवत्रिचित्रैर्विद्धे ॥ नखनिनेद्विवियवादिहि
वीका ६मीनयंकीकिनतसुलेवी ॥ २३ ॥ जननिचम्यकनेलमिदपूत्रामग
मक्षायमयीपटवासक ४ ॥ सत्रहिगभमिद ५ चतुस्रमैसपदिसर्वमिद

यनिगृह्णी ॥ २४ ॥ सीमकनरुगवनिमयासादग्रन्यरुभनल्लिनूत्रैमः
दृढयकमलरुषवर्षकनारु ॥ बालादिषयूनिनिवसदाहादिनायस्यक
निनरुधौनैरुनिसकलंवनसाचिकयामि ॥ २५ ॥ मन्दात्रकन्दकत्रवी
त्रलवम्पूष्यस्मान्दविसननमहंयत्रियूजयामि ॥ जानीजवावकूत्रैवम्य
ककनकादिनातोविधानिकसूमानिसमर्थयामि ॥ २६ ॥ मालनीवकूल
हमपूषिकाका ५ नात्रकत्रवीत्रकनक ४ ॥ कर्लुकात्रगित्रिकर्लुकादि
हि ४ पूजयामिउगदम्वनवपू ४ ॥ पात्रिजान ४ तपगुपाटलीमर्लुकाव

कलचम्यकादिहि॥ २॥ नमूँ ॥ वक्रसमे ॥ सादनीपूजयामिजगदम्ब
नवपू॥ लाकासैसैमिलिने॥ सिताउसरिहे॥ श्रीवाससैमिलिने॥ कर्पू
नाकलिने॥ सितामधूयने॥ र्गसपिषा लाडिने॥ २॥ श्रीरव क्षुगुगु
गुलयरुनिहिर्नाविधेर्वमुहिर्द्वयभयत्रिकल्पयामिजनतीधूर्यत्त
मैमीकन॥ नत्तालेकनरुमपाउनिहिने॥ र्गसपिषादीपिनेदीयेदीर्घन
मान्धकानहिर्नेर्वालाक काटिपुहे॥ २॥ नानामूकलइकलकलन
वदुत्तपदीपैरुथमानह्मामरुमादनादनूदिनीनीनाजयाम्युचके॥

मरुतिकनकपाउरुकापयित्वाविष्णुलान्जमनसदृष्टानूपान्यका (ग) ॥
मदीपान्॥ वदुत्तमधिनपुन्यरुदीपान्काम्यान्॥ उवनजननिकु
निरुमानार्हिकन॥ सविनयमथदत्ताजानूयुर्गमधर्नन्धसपदिसिनः
शिधुत्वापाउमानार्हिकस्य॥ ३॥ मरुवकमलसमीपनम्बसाईखिवानैः
उमयनिमयीरुयान्कृपाई॥ कटाक॥ मानह्मीदधिद्वयपायसमे
हा॥ ल्यन्तसका निकानरुपायूपसितायुर्न॥ सवनेके॥ सकोदुर्नहारु
ले॥ ३॥ एलाजीनकरिहुनागननिष्ठाकोमुन्वनीसकृते॥ साकमरु

स्रक्धिकनसेऽसक्यया मयिने॥ सायूपसूयदधिदुग्धसिनाशुता
 नि स्रक्तादरुक्पत्रमानपूत्रऽसत्रानि॥ ३३॥ साकाशसन्मनीचजीनक
 वाहिकानिरुक्तानिरुक्ताजगदम्भमयार्थिनानि॥ कीनभनदिदमलभाः
 लमैयाअमाअमिदमूकलैमधू॥ ३४॥ मानननदमभापमैत्वयार्थैः
 मयत्रिपीय ॐमदू॥ उष्टादकेऽयानियगीमूखैवपकात्यमानऽकः
 लक्ष्मीनपाकु॥ ३५॥ कर्पूत्रमिष्टमसकैकभनरुक्तासमूहकर्मचन
 नन॥ नूनिशीनमूशीनवातिनैतपनीयावयननिधदिने॥ ३६॥ यदः

यूनमिदंजिनामूनेशुचिगीममनमम्वपीयनी॥ नाप्राप्तनीहारुलसैयून
 निद्राकारुलाकाउसमन्विनानि॥ ३७॥ सनालिकलानिसदादिमानिरु
 लानिनदविसमर्पयामि॥ कर्मांतकाशनसैयूनानिजमीननार्नगसम
 न्विना॥ सवीजपूत्रानिसजाम्भवानिरुलानिनदविसमर्पयामि॥ ३८॥
 कर्पूत्रमयूनैलवमसहिनेऽकैकालचूभूनिनेऽस्रक्तादकमूकेऽस्रमेः
 नखदिनेऽस्रस्निग्धजानीफलैः॥ मानऽकनकपत्रयाधुनविहिकामूः
 लवलीदलेऽसानन्दमूखमधुनार्थमनुलेनामूलमङ्गीकृते॥ ३९॥ एला

लवङ्गदिसमन्वितानिके कालकर्षुन विमिश्रितानि ॥ ताम्बूलवल्लीदलसैय
तानियूगानिनदविमर्षयामि ॥ ४० ॥ ताम्बूलवल्लीदलनिर्जितरुमवर्षु
स्वधुनियूगदलमोक्तिकवर्षुयुक्तं ॥ त्रकस्तुगिस्तितमिदंस्वदिप्रसताः
इं ताम्बूलसैवचदनीवर्षुहृष्टा ॥ ४१ ॥ अथवर्षुमन्त्रिमिहोमोक्तिः
केस्तुविकीर्यत्रिभुवनकमनीयेषु पूजयित्वाचवर्षु ॥ मिलितविविध
मूर्त्तादिब्रह्मानिकयुक्तां जननिकनकवृक्षिन्दकिष्कामर्षयामि ॥ ४२ ॥
मातङ्गकाञ्चनदधुमन्त्रिमिदं पूर्यन् विम्वपहं नानात्रयविष्महिहं

मकलङ्गलाकउयाद्रादकं ॥ तस्मिन्मोक्तिकजालिकीपत्रिकनीषीत्यास्वरु
स्तुभनैर्कउन्मपत्रिकेत्ययामिसित्तित्तुष्टास्वयैनिर्मिकं ॥ ४३ ॥ अत्रः
विन्दुमनीचिह्नोत्रवर्षुमन्त्रिमूर्त्ताविलसत्स्ववर्षुदधु ॥ जगदम्बवि
चित्रचामत्रेस्तुमरुमानन्दरुनसपूजयामि ॥ ४४ ॥ मार्तुस्तुमस्तुलतिः
राजगदम्बथायैरुक्तामयामन्त्रिमयामुक्तायार्थिनस्तु ॥ पूर्यन् विम्वत्र
विनेवदनेस्वकीयमन्त्रिविलाकयविलातविलाचनेर्त्तु ॥ ४५ ॥ इन्द्राद
थाननिननेमूर्त्तुपदीयेनीत्राजयन्त्रिस्तननेनवपादपीठं ॥ तस्मादहं

नवसमस्तु शरीरमना न्नी राज्यामि ऊ गद म्म सद्यदीये ॥ ४७ ॥ प्रियग
 नित्रथर्तुं लोभनत्त कल्या सयूक ॥ कनकमयविरूष ॥ स्निग्धगम्भीरया
 ष ॥ रुगवतिकलिनायै वारुनार्थमया न तुनग शतसमभावाय वगस्तु
 न ॥ ४८ ॥ मधुकनैव न के रुन्यस्तु सिन्दूरन ॥ कलिननेकैकय ॥ किङ्किः
 ली (शहिक ६४) ॥ ध्रुवसयगलचंचामना भयतु ल्याजननिनवमूदका
 मरुमानन ॥ ४९ ॥ ४९ ॥ नननननने विनाजमाने मलिमयचक्रचक्रुष
 नयूक ॥ कनकमयमहं विना नवतं रुगवतिकलिनार्थममर्षयामि ॥ ४९ ॥

॥ रुयगजनथपहि (शहमाने दि लिदि लिदू नू हि मद्यनादयूक ॥ नथवदू
 चतुन ॥ सैन्यमनरुगवतिरुकि रुने सनर्ययामि ॥ ५० ॥ यत्रिषीकनसफ
 सागनी वदू सम्यस्तहिनेमयामन ॥ विपुलीधनलीनलाहि धनी पवलीदः
 न्निदिदसमर्षिने ॥ ५१ ॥ शतपतुयने ॥ खरावलिने नति सोनस्ययने ॥ यत्र
 गयूक ॥ उमनी मूरवनी कने नननने क्यजने स्त्री ऊ गद म्म वीजयामि ॥
 ५२ ॥ उमिविलू लिनलालकू लाली विगलिनमाल्यविकी लून ॥ रुमि ॥
 ५३ ॥ यमनिनू विनाने टीन ॥ नवदयमदमान नानुमान ॥ ५३ ॥ मः

खचलनविलासला लवली विलसिननिर्झितलातलहसमाला ॥ यवजन
मूरवकाविवात्रहीलारुगवनिनपूत्रमानठकिवाला ॥ ५५ ॥ नचित्रकूच
नटीनीनाद्य कालनटीनीपनिग्रहमथनकुपत्य हंपादूनासीन ॥ धिमि
किनिधिमिद्धिद्धिद्धिद्धिद्धि धिमिनिधिमिनिनलाथयिथयीनिहादा ॥

५५ ॥ उमदलिकलरुत्याला लधमिन्मूलागामितमूरवकमलाशुदिवान
वस्यपूजा ॥ ननूपमनमवषावात्रयाषानेठकीपनिवृत्तकलकभीदविधे
र्थधूनारु ॥ ५६ ॥ उमनूतिभिममसुत्रमल्लनीमृदूत्रवजयठउघटादय

॥ मटिनिमीकतिहिङ्गदन्तिकमूरुत्रयद्वयैदेहखयंगुन ॥ ५७ ॥ विप
चीपूतफस्वरात्वादयैत्यसुवदात्रिगयैनिगभर्तृकन्या ॥ कर्णसावधन
नचिननमान ॥ समाकसूयत्वंमयापार्थिनासि ॥ ५८ ॥ नूविनयकमनी
येनर्हकीनी कर्णमपित्रमयित्वाचनज्वलदीयी ॥ स्वयमरुमपिविभुर्न
त्यवादिषगीर्हगवतिरुवदीयीमानसैर्नजयामि ॥ ५९ ॥ नवदविगुल्ल
नूवसूनेचतुगास्त्रचतुत्रनादय ॥ नहिहृकमूरवषूजनुषूस्ववर्नक ॥ क
वकर्तुमीष्टव ॥ ६० ॥ पदपदयापत्रियूजकत्य ॥ सयाष्टमधादिरुलीदद

ति ॥ ती सर्वपापकथं हनु रूनां प्रदक्षिणां पत्रिनः कर्त्तव्या ॥ ३१ ॥ न क
 त्यत्रेन कलगाय हास्यां धर्माधर्मैश्च कलिकायां ॥ न (६) वदन्त्या
 न कवन्दितायां न भारवाती पदयैकजायां ॥ ३२ ॥ न न सनति न युग्मं
 पद्मजं ॥ पूजयित्वा कनककमलमासीकलं द (६) र्थयित्वा ॥ मित्रसि वि
 निहितायै न त्रप्यो जलित्वा दयकमलमक्षद्विहर्षनानु ॥ ३३ ॥
 ति नृथमा मयमै चिकाहिनामं युनिमतिपूषा विना न राजमान ॥ पत्र
 दगत्रुधूपैधूपितस्मिन् रगवनिवात गृह्णु भनिवात ॥ ३४ ॥ न स्मि

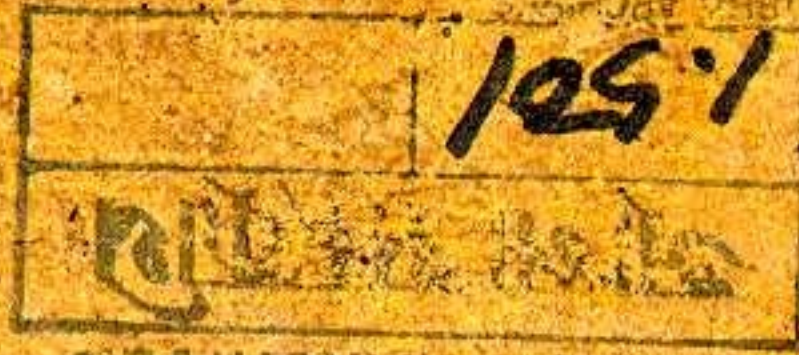
न स्मि मय रविसूत्र सूयी ॥ ३५ ॥ लाका रुय दो निधय पा दो ॥ विस्ती (६)
 मृदू लन गाल न कृदस्मि न्यर्थं कक न क मय नि (६) द मान ॥ ३६ ॥ हव द
 वि सत्राज विद्रुया ॥ पदया निर्जि न पय न ग या ॥ न नित्र क न त्रे न ल क
 के ॥ पू न नू कां च न या मित्र क कां ॥ ३७ ॥ नृथ मान नू ही न वा सि नै निजः
 मामूल न स न न जि नै ॥ न पयी य म थ हि पट्ट क मू ख ग सु ष ज नै नि धी य
 ती ॥ ३८ ॥ कल म थ ज ग द म्ब म मि च क स्मि न्मृ दू न न रु ति क या वि ना उ मा
 न ॥ न नित्र रु सि म द सि व न सा र्धं स ख ह य नै क नू मां द दि स्म न की ॥ ३९

॥ मकारं नन्दं नृगोत्रीं मन्त्रिमयं मकरां नत्तनाट्ययुक्ता मकरप्रबुद्धा रु
 क्षामरुयवत्रकनाचलुचुडी विनयी ॥ नानासंकात्रयुक्ती सत्रमूकठम
 निशानिनस्वर्णी ॥ ०१ ॥ सानन्दसिंघसन्नी किमुवनजननीं वतसा विनया
 मि ॥ एषा रुक्मानववित्रचिता यामयादविपूजास्त्री कृत्येनी सपदिसकः
 ली भपना धानुक्रमस्व ॥ १० ॥ न्यूनैर्यरुक्ता वक्रनूयया पूरुता भस्ममान ॥
 सानन्दं भद्रदयेकमलं नलु नित्यं निवास ॥ पूजा मिमी ॥ १० ॥ न्यान ॥ पूजा क
 र्त्तुं मनीष्वन ॥ ११ ॥ पूजा रुक्ता मवा प्रातिवाङ्मि नार्थं वविन्दनि ॥ पत्युं रु

किरीयुक्ताय ॥ पूजनमिदं प १० नू ॥ १२ ॥ वाग्मदिन्या ॥ पसादनवत्सगा
 लकविर्द्ववता ॥ ॥ १३ ॥ निशीलकनाचार्यवित्रचिनी हवानी वरुषयु
 यचात्रमानसपूजाविधिः समाप्ता ॥ ॥ १४ ॥ ॥ मरु ॥ सर्वदा ॥
 १५ ॥ नमो नवान्यै ॥ ॥ मृत्युप्रवदने घोरे अट्टहासदुरासदे ॥ ज्वाला कालिमः
 हा कालिगुहा कालिनमोनमः ॥ ज्वालापिंगजटातोये ज्वाला ज्वलितलोचन
 ॥ ज्वाला ॥ रक्तज्वालामहाजिह्वे रक्तकर्दममालिनि ॥ ज्वाला ॥ मलायेनास
 ने देवि पंचयेत नमस्कृते ॥ ज्वाला ॥ सप्तविंशतिमुग्धाद्ये श्मशाने शिवनर्त

कि॥ ज्वाला०॥ पंचाक्षरमहात्मोत्रं यः पठेत्कालिकारयः॥ धनवृद्धिर्महारा
जं शुक्लाब्जागैरनेकसः॥ ज्वाला०॥ देहान्नेयिमहास्वर्गं शुक्लादेविमहे
श्वरि॥ पुनःपासादतोदेवा गुह्यकाल्याश्च शोचने॥ सारूप्याविषदेयाप्यः
कालीसायुज्यविंदति॥ ॥ इति अथर्वण शिखायां गुह्यकालिसप्तसप्त
॥ ॥ १०॥ नमो नवान्यै॥ ॥ त्वमसि परमकालिसिद्धिलक्ष्मीत्वमेव त्रिभु
वनविजयात्मराजराजेश्वरीत्वं॥ त्रिविधपुरवरात्वं बोधबामेश्वरीत्वं त्वम

सिविविधदेवीमन्त्रलक्ष्मीत्वमेव॥ त्वमसि सकलनाथा कालसंकर्षणीत्वं
विलसितवदुनेदासप्रकोटे श्वरीत्वं॥ त्वमसि परमराजेश्वरीत्वं
त्वमसि विविधधाता गुह्यकुटुंबेश्वरीत्वं॥ त्वमसि परमताराश्रादिकाद्याः
स्वयादि विविधविधिविशेषा विश्वरूपात्वमेव॥ कलितकुलविकल्पाक
ल्पसंकल्पकल्पा कललचपल जिह्वाफेरुवदासनस्था॥ कुशलमयसरी
रात्रिमोदप्रचारा नवतुलसमुखे शोचसंचोरहंती॥ त्रिजगति तव ना
नाणाममासायवृत्ता विषमगहनरूपापापपा कान्निधाता॥ त्वमसि परम



ASHA ARCHIVES



देवी दीप्यमानप्रतापा विविधपरमामामो रुनधात्रक श्री॥ कं रं गं घं
 उं प दा या दे वि का मे श्वरी त्वं ॥ वं रुं जं जं त्रं प दा र्था मे दि नी मे दि नी त्वं ॥
 टं ० उं ठं णं प दा त्तानिर्मला देवता त्वं तं थं दं धं नं प दा या दे वि दी प्रा रु ण
 त्वं ॥ पं फं वं नं मं प दा र्था जै त्र शी ला शु भा त्वं यं रं लं वं प द रू पा दे वि सर्वे श्व
 री त्वं ॥ शं षं सं हं सं प द वर्गा को लि नि आ त्र दे वी त्वं म सि व र अ आ या क र्षः
 णि दे व ता त्वं ॥ ॥ इति श्री गुरु कालि कालु तिस मा प्र ॥ ॥ अ न म स्तु ॥
 ॥ य द श र प द उ षं मा त्रा ही नं तु य द वे त् । त त्स र्वं स म्य ता दे वि प्र सी द पर मे श्वरी ॥

॥ स्वस्ति श्री गणेशाय नमोः ॥ श्री सरस्वति नमोः ॥ श्री महादेवी रव नमोः ॥ नमस्तुति ॥
 अ को द्वि पं च सु रा मी मृ ति ग श्र भौ मः । त त्स त्व थो श दि सु न श्र मु ह नृ ह
 म्यः ॥ जी व त्स्व ती य भ व ने । प रि ग म्य श्रु को ज न्म न्म थो श नि रि तो । सु र ए व
 ध र्मे ॥ १ ॥ ते गा नृ शो का नृ भी त्ता था मा न ना श त्त्वं त्रा स न्ने व स पा द य त्ति ॥
 यो गा नृ दृ ष्टा वे त्सा सि न य ती रा ता त्थे के दा नु म ह ति बो धाः ॥ २ ॥

१२३४५६७८
 २।५।७।९।१३।१५।१७।१९।

श्रीवज्रयोगिनी नमः॥ ॥ अनादिनी लतारिणी नमुणुकण्ठमालिनी सदासुखाट्ट
लसिनी महतिनी मरुषिणीम् ॥ शिरोनिवद्धजोगिनी कवचमुक्कुरूपिणी मनीषिणी मद
द्विणी नमामिवज्रयोगिनीम् ॥ १ ॥ सदातिखर्ववर्षिणी खरुलकटधारिणी महादिशंख
धारिणी महापरेतवाहिनी ॥ समस्तविश्वमोहिनी महाविपत्यनंजिनी तुरीयवर्गदायि

नी नवीमिवजुयोगिनीम् ॥ २ ॥ प्रवरसुवणमुणुमुणुखणुखणुकारिणी सुरारिसेरि
नादिनी त्वनक्तशोकशोचिणीम् ॥ विषक्षपक्षनक्षिणी महाद्यसद्यधातिनी समस्तदु
ष्टखणिनी स्मरामिवजुयोगिनी ॥ ३ ॥ महावराह रूपिणी महादिकालसंगिनी महोग्रचः
णुरूपिनी महेशचित्रवातिनीम् ॥ अनन्तकाण्डमालिनी त्वनन्तनागचूषिणी मरुतशक्तिधा
रिणी नजामिवजुयोगिनीम् ॥ ४ ॥ चतुर्दशब्रुवातिनी रसक्षुद्राब्रुवाल्लिनी दशारमध्यगा
मिनी द्विदिक्षुद्राब्रुवेश्मनीम् ॥ विषुद्धचक्रवातिनी द्विपत्रपक्षवातिनी सरुद्रपत्रचारि
णी प्रणैमिवजुयोगिनीम् ॥ ५ ॥ त्वमेववैधराधराधराधरात्मजाधरा त्वमर्णवात्मजार्णका
र्णमुद्रि नार्णसिद्धिदा ॥ मरुत्सखोमरुत्तमरुत्कृतिग्रहर्क्षनर्तका यजाग्रमानरूपिणी

शिवे सुवज्रयोगिनी ॥ ६ ॥ समस्त योगसक्त चित्र योगसिद्धिदायिनी ततो हि नाम योगिनी
 ति गीयते जगत्त्रये ॥ स्मरन्नि नाम ते चिके स जावना स्मरु जना स्मरन्नि ते यथा जया यथा
 रिणी ति गीयते ॥ ७ ॥ त्वमात्मनू विधुश्चि वस्त्वमेव शक्तिरिदिरा त्रयी सती सरस्वती मनु
 र्गुह्यरात्मिका ॥ न किंचिदस्ति नौ वने त्वया विना चतुर्दशैः मदन चित्र वासिनी शिवे
 सुवज्रयोगिनी ॥ ८ ॥ पठेन्न वसमुद्र तारिवज्रयोगिनी लुत्तिः लनेत्रिखिल कामना मतन्य
 जावना मनाः ॥ अत्रक्त सुरनिन्द कातिपैशुनाति गोपनां गणेश गुरुनी लवाणि कां धिन
 ग्रहकृताम् ॥ ९ ॥ ॥ इति श्री परब्रह्म स्वरूपिणी वज्रयोगिनी पंचवामराष्टक लुत्तिः स
 माप्ता ॥ ॥ ॥ ॥ श्री विश्व जन नमः ॥ अतरे संसारे तव भजन दूरश्चि सुररुः सः

जुष्टा म्पाद सतत कुचपाना कुलमनाः ॥ न जाने त्वच्छान्त वचरण पूजा विधि मन्त्र जनुः
 नीतं वा ल्यं शिव शिव निरर्थे न जननि ॥ १ ॥ अये मातर्दुर्गे विषय रस लोने न कलुषी कृतं स्वां
 तं ज्ञानं सुवति जनसंगे न खलु मे ॥ अतस्त्वया दातु स्मृति चिति निमग्री कुरु कुरु मे हामनु
 सुत्रो यदि न जननी वीत करुणा ॥ २ ॥ दरिद्रं दुःखार्तं कृतं सुकृतं दुःकृतं कृतं मकिञ्चिदुं मू
 ढं विषय विष विग्रं विपुरुषं ॥ निमग्नं विश्वाच्चौ तरय सदये तारिणि शिवे स्थिरी नूया चि
 त्ते मदय गम काले तव मनुः ॥ ३ ॥ वयो नीतं सर्वं हरि हरि निरर्थे न जननि तनूवा किं तैर्वाः
 तव चरण सेवान विधुता ॥ न जप्ते न ध्यातं सिपति यमराष्टोर नरके सह यात त्रैवत्त मितर
 सुरा नो परिचिताः ॥ ४ ॥ निता नैर्दुःखं सदन वसना राम रमणी विजिज्ञातुं विद्या विषय
 मतये किंच न सुरं ॥ विनीतं मां पापं सिपति तरके रुष्ट यमराड विहाय त्वया दं वद वद

हि कंया मिशरणं ॥ ५ ॥ मरुविता मग्नं विषय विषल मग्नं विषिषणं सरो गैष्विन्नं सुजन
 गणनिन्नं कलुषिणं ॥ तदा विन्नो द्विगं सुकृत कृतिन गत धनं कृपापां गेदुर्गेत वज
 ननिवां कुरुयथा ॥ ६ ॥ नराणां पापानां कलिकलुषिमादृक् कलुषिणं दरिद्राणां मा
 दृष्टु विणरुहितानां रुतधियां ॥ अमाया सुकानां तव जजनदूरीकृत हृदं मरुमाये
 मातर्न हि शरणदात्वा मिरुविना ॥ ७ ॥ समुदेव क्रौवाव सवहुरि संघे घनरे से रणे वारणे
 वा जयसमुदये वा निरये ॥ शवस्थे सुस्थे वापि दिविष मसंस्थे च निरये सहाया मे नूया
 त्य कल जननिन्नं कुरुया ॥ ८ ॥ मरु उक्रौवृणां जनुषि मरणे मातुदर के पशौ कीडे नै
 देश शक मशकां न स्थलचरे ॥ तदा योनः पुन्ये मम नवदनु क्रौश विशरै स्थिरी नूया चिः
 तैत ववरणं नक्तिर्न गवति ॥ ९ ॥ मितेशा के सुक्रार्जुन करतुरंगा र्जुन करै मिते नैवे वारे

र्जुन कर तिथा व र्जुन करे ॥ मणीत्यग्रे रामो विरचयति मातुस्त्रिजगतां सतां वक्त्रे त्रि
 वसतु नदम्बा पद जुषां ॥ १० ॥ इति श्री विश्वजनेनी त्रोटं संपूर्णम् ॥ ॥ ॥ ॥
 ॐ नमः श्री गुरुभ्यो नमः ॥ जंजं जंजं सरूपं दशदिशवसितं नमिकं पायमानं ॥
 संसं संहार मूर्ति श्री रसुकुतजता शेषरंच नु विवं ॥ दं दं दं दिद्यं कापं विकृत नख मुखं उर्द्धरो
 मं कला लं ॥ पंपं पापनाशं प्रणमत सततं नैरव सत्रपारं ॥ १ ॥ रं रं रं रं कृवर्णं कठकटित
 तनुं शोभं करालं ॥ घं घं घं घोरघोघं घघघघदितं घघराघोरनादं ॥ कं कं कं कालपाशं
 धं धं धं धं किटकिट कृतां ज्वालिता कामदज्यं ॥ तंतं तंतं दिव्यरूपं देहं पणमत शतत नैरवं
 सत्रपारं ॥ २ ॥ लं लं लं लं वदनं ललललललीतं दीर्घजिह्वा करारं ॥ धूं धूं धूं धूं मुखं

१ॐ नमो श्री विष्णवे नमः ॥ ॥ अथ वचः ॥ कथितास्ति नमः सायाः याया विद्याः मुगो पिता ॥ त्व
या नाये नमो विद्याः कृता च गदिता मया ॥ १ ॥ इदानीं प्रोक्तुमिच्छामि कवचं पूर्वसूचितं ॥ त्रैलोक्यवि

